आजादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

प्रवेशांक

राजभाषा सिक्किम

(भाषा, साहित्य और शिक्षा का नवीन संगम)

(जनवरी-जून 2023)

निर्माणाधीन विश्वविद्यालय परिसर, यांगयांग, दक्षिण सिक्किम।

सिक्किम विश्वविद्यालय
6 माइल, तादोंग, गंगटोक
www.cus.ac.in

प्रवेशांक

राजभाषा सिक्किम

(भाषा, साहित्य और शिक्षा का नवीन संगम)

अर्धवार्षिक पत्रिका

(जनवरी-जून 2023)

वर्ष : प्रथम
अंक : 1

सिक्किम विश्वविद्यालय
6 माइल, तादोंग, गंगटोक
www.cus.ac.in

राजभाषा सिक्किम

राजभाषा सिक्किम
(भाषा, साहित्य और शिक्षा का नवीन संगम)
अर्धवार्षिक पत्रिका
(जनवरी-जून 2023)

संरक्षक - प्रो. अविनाश खरे, कुलपति, सिक्किम विश्वविद्यालय
मुख्य सलाहकार - श्री के.वी.एस. कामेश्वर राव, कुलसचिव, सिक्किम विश्वविद्यालय
परामर्श मण्डल - श्री प्रताप केशरी दाश, वित्त अधिकारी
- डॉ. श्री राम, पुस्तकालयाध्यक्ष
- डॉ. एस मुरली मोहन, परीक्षा नियंत्रक
- प्रो. रोजी चामलिंग, डीन, भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
- डॉ. हरदीप सिंह, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग

मुख्य संपादक - सुश्री जुतिका गोस्वामी, हिंदी अधिकारी
सहयोग - श्री कुमार बाबला, हिंदी अनुवादक (अनुबंध आधारित)
संपादक मण्डल - डॉ. दिनेश साहू, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
- डॉ. चुकी भूटिया, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
- डॉ. प्रदीप त्रिपाठी, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
- डॉ. सुजाता उपाध्याय, सह प्राध्यापक, उद्यानिकी विभाग
- डॉ. देवचंद्र सुब्बा, सहायक प्राध्यापक, नेपाली विभाग
- डॉ. धृति रॉय, सह प्राध्यापक, चीनी विभाग

पत्र व्यवहार का पता :

संपादक,
हिंदी प्रकोष्ठ,
सिक्किम विश्वविद्यालय,
6 माइल, सामदूर, तादोंग,
गंगटोक, सिक्किम – 737102
ईमेल – hc@cus.ac.in
वैबसाइट – www.cus.ac.in

विषय-सूची

क्रमांक	विवरण		पृष्ठ संख्या
1	**कुलपति का संदेश**		01
2	**कुलसचिव का संदेश**		02
3	**संपादकीय**		03
4	**सिक्किम विश्वविद्यालय में राजभाषा की स्थिति**		04
5	**राजभाषा विभाग द्वारा दिये जानेवाले विविध पुरस्कारों के बारे में**		05-06
6	**कविताएं**		
	ये जीवन क्या है ?	- डॉ. सुजीत कुजूर	07
	क्या पाया क्या खोया	- डॉ. निधि सक्सेना	08
	फ्लाईओवर	- श्री बी आकाश राव	09
	परिवर्तन	- सुश्री सबनम भुजेल	10
	जिंदगी चलती रहती है	- सुश्री प्रियंका कुमारी	11-12
	माँ- एक एहसास	- श्रीमती सरिता तिवारी	13
	मुंतजीर	- श्री सोवन दत्ता	14
	मंज़िल और मसाफ़त	- सुश्री मिलिशा महापात्र	15
	इक्कीसवीं सदी की शुभ घड़ी	- सुश्री विद्या छेत्री	16
	कलियुग	- सुश्री ऋतु रानी	17
	प्रकृति-रंग ऋतुओ में : जैविक खेती	- श्री दीपक कुमार ठाकुर	18
7	**धरोहर**		19-21
	"कामायनी" का चिंता भाग-1	- जयशंकर प्रसाद	
8	**फोटोग्राफी**	- केशव की लेन्स से	22
9	**शोध लेख**		
	अवध में अवधि बोली की विकास यात्रा	- श्री अवनीश द्विवेदी	23-24
10	**पुस्तक समीक्षा :**		
	द्वंद्वों से मुक्ति का रिश्ता : आज़ादी मेरा ब्रांड	- सुश्री ज्ञानवती कुमारी साह	25-26
11	**कहानी**		
	बहादुर सैनिक	- श्री प्रदीप कुमार तामांग	27-28
12	**अनुभव**		
	"कुछ पल का रिश्ता, बिछड़ना हमेशा के लिए"	- श्री विवेक मोक्तान	29
	विश्वविद्यालय में राजभाषा हिंदी और मेरा अनुभव	- श्री गगन सेन छेत्री	30
	सिलीगुड़ी –एक सफर	- अशेष शर्मा	31
13	**उपलब्धियां** विश्वविद्यालय में संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं छात्रों की विशेष उपलब्धियां		32-37
14	**राजभाषा गतिविधियां :** विश्वविद्यालय में आयोजित राजभाषा हिंदी की विभिन्न गतिविधियों की एक झलक		
15	**प्रशासनिक लघु वाक्य**		38
16	**लेखकों से अनुरोध**		39

राजभाषा सिक्किम

सिक्किम विश्वविद्यालय
गंगटोक, सिक्किम- 737102

प्रो . अविनाश खरे
कुलपति

संदेश

*यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सिक्किम विश्वविद्यालय के हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा "**राजभाषा-सिक्किम**" नामक अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका का पहला अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।*

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से हमारे छात्रों, संकायों और कर्मचारियों के बीच हिंदी में लेखन धर्मिता को बढ़ावा मिलेगा और साथ ही उन्हें अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने का एक उपयोगी मंच मिलेगा। यह पत्रिका पूरे भारत में स्थित केंद्रीय विश्व-विद्यालयों, केंद्रीय कार्यालयों में भाषाई सौहार्द के प्रसार के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होगी और राजभाषा नीति के क्रियान्वयन को दृढ़ता प्रदान करेगी।

*मैं "**राजभाषा-सिक्किम**" के प्रकाशन में संपादक मण्डल के अथक परिश्रम की सराहना करता हूँ और "**राजभाषा-सिक्किम**" के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।*

शुभकामनाओं सहित

अविनाश

प्रो. अविनाश खरे

श्री के.वी.एस.कामेश्वर राव
कुलसचिव

सिक्किम विश्वविद्यालय
गंगटोक, सिक्किम- 737102

संदेश

*सिक्किम विश्वविद्यालय के हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा **"राजभाषा सिक्किम"** नाम से अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है, जो बेहद सराहनीय है।*

हिंदी केवल हमारी राजभाषा ही नहीं बल्कि हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति की संवाहिका भी है। हिंदी विश्व में तीसरी सबसे बोली जानेवाली भाषा है। केंद्र सरकार ने राजभाषा हिंदी के व्यापक एवं सतत विकास के लिए राजभाषा विभाग का गठन किया है। राजभाषा विभाग द्वारा सभी केंद्रीय संस्थानों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए राजभाषा नीति और दिशा-निर्देश जारी किए जाते हैं। एक केंद्रीय विश्वविद्यालय होने के नाते सिक्किम विश्वविद्यालय राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग के लिए निरंतर प्रयासरत है।

*मुझे आशा है कि **"राजभाषा सिक्किम"** पत्रिका का प्रकाशन से विश्वविद्यालय के छात्रों, संकायों और कर्मचारियों के बीच राजभाषा हिंदी के पठन-पाठन की रुचि बढ़ेगी।*

*"**राजभाषा सिक्किम**" की पूरी टीम को मेरी ओर से अनंत शुभकामनाएं।*

के.वी.एस.कामेश्वर राव

संपादकीय

सिक्किम विश्वविद्यालय हिंदी प्रकोष्ठ की अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका **"राजभाषा सिक्किम"** के प्रथम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करने का अवसर पाकर मैं गौरवान्वित हूँ। पत्रिका का यह अंक विश्वविद्यालय परिवार को समर्पित है। पत्रिका का उद्देश्य विश्वविद्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ भाषा, साहित्य और शिक्षा के नवीन संगम के रूप में विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और छात्रों को उनकी साहित्यिक अभिव्यक्ति के लिए मंच प्रदान करना है। मैं आशा करती हूँ कि आनेवाले समय में यह पत्रिका अधिक मनोग्राही, सारगर्भी होगी और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

हर स्वतंत्र राष्ट्र की एक भाषा होती है, जो अपने देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक,सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में हुई प्रगति का सशक्त आधार होती है। आजादी के बाद भारत जैसे बहुभाषी देश के लिए एक भाषा को चुनना चुनौतीपूर्ण था। अंत में पूरे देश के प्रतिनिधियों की सर्वसम्मति से हिंदी की लोकप्रियता, व्यापकता, सुबोध और वैज्ञानिक लिपि को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को संविधान में संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकृति दी गई। तब से केंद्र सरकार राजभाषा हिंदी को समूचे भारत में काम-काज की भाषा के रूप में पूर्ण रूप से स्थापित करने के लिए भगीरथ प्रयास कर रही है। केंद्र सरकार द्वारा समय-समय राजभाषा नीतियाँ, नियम, विनियम, आदेश आदि जारी किए जाते हैं, ताकि केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हो। केंद्रीय विश्वविद्यालय होने के नाते हमारे विश्वविद्यालय राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। **"राजभाषा सिक्किम"** का प्रकाशन भी इसी प्रयास का एक स्वरूप है।

"राजभाषा सिक्किम" के इस अंक में विभिन्न साहित्यिक विधाएँ- जैसे, कविता, कहानी, लेख, पुस्तक-समीक्षा आदि के साथ-साथ हिंदी प्रकोष्ठ की गतिविधियाँ, राजभाषा विभाग, भारत साकार द्वारा दिये जा रहे विभिन्न पुरस्कार आदि की जानकारी भी शामिल की गई।

पत्रिका के इस अंक के सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देती हूँ। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में मार्गदर्शन करने के लिए कुलपति महोदय, कुलसचिव महोदय, परामर्श मण्डल और विशेष रूप से संपादक मण्डल के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ।

पहला प्रयास होने के कारण पत्रिका में भूल-चूक होने की संभावना है। पाठकों से अनुरोध है कि इस अंक को पढ़ें और अपनी प्रतिक्रिया और बहुमूल्य सुझाव अवश्य दें।

धन्यवाद !

जुतिका गोस्वामी

जुतिका गोस्वामी
हिंदी अधिकारी

विश्वविद्यालय में राजभाषा हिंदी की स्थिति

सिक्किम विश्वविद्यालय 'ग' क्षेत्र में स्थापित एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है। एक केंद्रीय संस्थान होने के नाते, सिक्किम विश्वविद्यालय भारत सरकार की राजभाषा नीति और राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों के अनुपालन करते हुए विश्वविद्यालय के आधिकारिक कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के दृढ़ प्रतिबद्ध है और साथ-ही-साथ विश्वविद्यालय के कर्मचारी सदस्यों और छात्रों के बीच हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए सतत प्रयासरत है।

सिक्किम विश्वविद्यालय लगातार सख्ती से सभी अधिसूचनाओं, परिपत्रों, कार्यालय आदेशों, मंजूरी आदेशों, वित्तीय मंजूरी आदेशों, छुट्टी आदेशों, नियमों एंव विनियमों, दिशानिर्देशों, क्रय आदेशों, मानक प्रारूप आदि को द्विभाषी रूप से जारी करना सुनिश्चित करता है। प्रत्येक वर्ष विश्वविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट और वार्षिक लेखा के हिंदी संस्करण को निर्धारित समय पर तैयार किया जाता है। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाता है की विश्वविद्यालय की हिंदी वैबसाइट की सभी सामग्री को नियमित रूप से हिंदी में अपलोड किया जाएँ।

तिमाही रिपोर्ट: हिंदी प्रकोष्ठ विश्वविद्यालय में राजभाषा के उपयोग के संबंध में हिंदी त्रैमासिक रिपोर्ट तैयार करता है और हर तिमाही के अंत में शिक्षा मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, राजभाषा विभाग और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (टीओएलआईसी) को रिपोर्ट भेजता है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक: विश्वविद्यालय ने त्रैमासिक रिपोर्ट पर चर्चा करने और विश्वविद्यालय में हिंदी की स्थिति में सुधार के उपायों पर सुझाव देने के लिए प्रत्येक तिमाही के अंत में माननीय कुलपति की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की जाती है।

राजभाषा कार्यशाला : वर्ष 2022-23 के दौरान प्रत्येक तिमाही में राजभाषा हिंदी के प्रयोग से संबंधित कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। दिनांक 8 अप्रैल 2022 को "हिंदी की व्याकरणिक संरचनाएं – केंद्रीय कार्यालय के कामकाज के विशे संदर्भ में विषय पर ऑनलाइन कार्यशाला आयोजित की गयी। दिनांक 28 सितंबर 2022 को "कार्यालय में हिंदी में कार्य करने के लिए कम्प्यूटिंग उपकरणों का प्रयोग" तथा "आजादी की लड़ाई में पूर्वोत्तर के साहित्य की भूमिका पर कार्यशाला-सह-संगोष्ठी का आयोजन किया गया। दिनांक 19 अक्टूबर 2022 को "रजिष्टरों में द्विभाषी प्रविष्टि एवं रिकॉर्ड का रखरखाव" विषय पर कार्यशाला आयोजित की गयी। दिनांक 27 जनवरी 2022 को राजभाषा विभाग के लीला सॉफ्टवेर के माध्यम से हिंदी शिक्षण विषय पर कार्यशाला आयोजित की गयी। सभी कार्यशालाओं में कर्मचारियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिंदी पखवाड़ा - 2022: सिक्किम विश्वविद्यालय ने दिनांक 14 सितम्बर से 29 सितम्बर 2022 तक हिंदी पखवाड़ा – 2022 का आयोजन किया। इस पखवाड़े के दौरान विश्वविद्यालय के छात्रों और कर्मचारियों दोनों के लिए सात प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। कर्मचारियों के लिए हिंदी श्रुत लेख, पत्र लेखन, हिंदी टिप्पणी एंव प्रारूपण लेखन और हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। हमारे विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए कविता पाठ, निबंध लेखन और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। प्रत्यके प्रतियोगिता के लिए निम्नानुसार चार नगद पुरस्कार रखे गए थे।

प्रथम पुरस्कार – 5000/- (रुपये पाँच हजार केवल)
द्वितीय पुरस्कार – 4000/- (रुपये चार हजार केवल)
तृतीय पुरस्कार – 3000/- (रुपये तीन हजार केवल)
सांत्वना पुरस्कार – 2000/- (रुपये दो हजार केवल)

दिनांक 29 सितंबर, 2022 को हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह को आयोजित किया गया था। इस अवसर पर वरिष्ठ प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग तथा प्रभारी कुलपति प्रो. शांति स्वरूप शर्मा, कुलसचिव श्री कामेश्वर राव एवं पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. श्री राम उपस्थित रहें। समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

****

राजभाषा से संबंधित विभिन्न पुरस्कार

भारत सरकार के राजभाषा विभाग हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रकार के पुरस्कार और प्रोत्साहन प्रदान करते आ रहे है।

क) राजभाषा गौरव पुरस्कार : आधुनिक ज्ञान विज्ञान की विभिन्न विधाओं एवं राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मौलिक रूप से राजभाषा हिंदी में पुस्तक लिखने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रति वर्ष भारतीय नागरिकों को "राजभाषा गौरव" पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

प्रथम पुरस्कार – ₹2,00,000/- (दो लाख रुपये), प्रमाणपत्र एवं स्मृति चिन्ह
द्वितीय पुरस्कार – ₹1,25,000/- (एक लाख पचीस हजार रुपये), प्रमाणपत्र एवं स्मृति चिन्ह
तृतीय पुरस्कार – ₹75,000/- (पचहत्तर हजार रुपये), प्रमाणपत्र एवं स्मृति चिन्ह

ख) राजभाषा कीर्ति पुरस्कार : राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने के लिए राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा राजभाषा के प्रयोग में बेहतर प्रगति दर्ज करनेवाले मंत्रालय/विभाग, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, बोर्ड, स्वायत्व निकायों, राष्ट्रीयकृत बैंकों और राजभाषा गृह पत्रिका को प्रति वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार प्रत्येक क्षेत्र अर्थात 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करनेवाले मंत्रालय, विभाग आदि को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के रूप में **राजभाषा शील्ड** दिये जाते हैं। राजभाषा गृह पत्रिका के लिए "क", "ख", और "ग" क्षेत्रों के सर्वश्रेष्ठ दो पत्रिकाओं को प्रथम और द्वितीय पुरस्कार दिये जाते है।

विस्तृत जानकारी राजभाषा विभाग की आधिकारिक वैबसाइट **www.rajbhasha.org.in** पर उपलब्ध है।

कार्यालय स्तर पर दिये जाने वाले विभिन पुरस्कार और प्रोत्साहन निम्नानुसार हैं :

1. राजभाषा विभाग, भारत सरकार के निर्देश के अनुसार प्रत्येक केंद्रीय कार्यालय में किसी भी वित्तीय वर्ष के दौरान राजभाषा हिंदी में टिप्पणी लेखन, रजिस्टर में प्रविष्टियाँ करने के लिए 'क' और 'ख' क्षेत्रों के लिए 20,000 शब्द और 'ग' क्षेत्र के लिए 10,000 शब्द पूरा करनेवाले कर्मचारियों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (नगद राशि) प्रदान किए जाते है। ये पुरस्कार अपने –अपने कार्यालय स्तर पर दिये जाते हैं।

   पुरस्कार राशि निम्नानुसार है :

   प्रथम पुरस्कार : रु. 5000/- (2 पुरस्कार)

   द्वितीय पुरस्कार : रु. 3000/- (3 पुरस्कार)

   तृतीय पुरस्कार : रु. 2000/- (5 पुरस्कार)

2. हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा आयोजित प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षा में उत्तीर्ण कर्मचारियों को संबंधित कार्यालय द्वारा नगद पुरस्कार और प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण करनेवाले कर्मचारियों को नगद पुरस्कार के साथ-साथ एक वर्ष की वेतनवृद्धि प्रदान की जाती है।

क. प्रबोध :

70% प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर	1600/-
60% प्रतिशत किन्तु 70% से कम अंक प्राप्त करने पर	800/-
55% प्रतिशत किन्तु 60% से कम अंक प्राप्त करने पर	400/-

ख. प्रवीण

70% प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर	1800/-
60% प्रतिशत किन्तु 70% से कम अंक प्राप्त करने पर	1200/-
55% प्रतिशत किन्तु 60% से कम अंक प्राप्त करने पर	600/-

ग . प्राज्ञ

70% प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर	2400/-
60% प्रतिशत किन्तु 70% से कम अंक प्राप्त करने पर	1600/-
55% प्रतिशत किन्तु 60% से कम अंक प्राप्त करने पर	800/-

घ. हिंदी शब्द संसाधन/हिंदी टंकण

97% अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/-
95% अंक अथवा उससे अधिक किन्तु 97% से कम अंक प्राप्त करने पर	1600/-
90% अंक अथवा उससे अधिक किन्तु 95% से कम अंक प्राप्त करने पर	800/-

ङ हिंदी आशुलिपि

97% अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त करने पर	2400/-
92% अंक अथवा उससे अधिक किन्तु 95% से कम अंक प्राप्त करने पर	1600/-
88% अंक अथवा उससे अधिक किन्तु 92% से कम अंक प्राप्त करने पर	800/-

3. हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करनेवाले कर्मचारियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए जाते है। इसमें नगद राशि और प्रमाणपत्र दिये जाते है। पुरस्कार राशि पूरी तरह से संबधित कार्यालय द्वारा निर्धारित की जाती है।

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं के लिए चार पुरस्कार रखे जाते है। सभी विजेताओं को नगद राशि के साथ प्रमाणपत्र प्रदान किए जाते है।

पुरस्कार राशि निम्नानुसार है :

प्रथम पुरस्कार - 5000/-
द्वितीय पुरस्कार - 4000/-
तृतीय पुरस्कार - 3000/-
सांत्वना पुरस्कार -2000/-

****

कविताएं :-

ये जीवन क्या है?

- डॉ. सुजीत कुजूर
उप पुस्तकालयाध्यक्ष
सिक्किम विश्वविद्यालय

ये जीवन क्या है?
एक सफर है।
जो उमंग, तरंग और
अभिलाषाओं से परिपूर्ण है।
जिसका आरम्भ - अंत हम है,
बस कुछ करने की चाह है।

ये जीवन क्या है?
एक लक्ष्य है।
जो कठिनाई, समस्या और
धर्मसंकटों से घिरा हुआ है।
जिसको झेलना - उभरना हमें है,
बस लक्ष्य पाने की चाह है।

ये जीवन क्या है?
एक परिश्रम है।
जो कष्ट, परेशानी और
दुखों से भरा पड़ा है।
जिसका उजागर -निवारण हम है,
बस जीवन सफल होने की चाह है।

ये जीवन क्या है?
एक रिश्ता है।
जो स्नेह, नफ़रत और
भावनाओं का बड़ा भँवर है।
जिसमे डूबना -निकलना हमें है,
बस अच्छे रिश्ते ही रहे, हमने चाहा है।

ये जीवन क्या है?
एक सत्य है।
जो झूठ, मक्कारी और
सत्यता का अनंत सागर है।
जिसे अपनाना -त्यागना हमें है,
बस सत्य की विजय और पाप की हार हो।

****

क्या खोया और क्या पाया ?

- डॉ. निधि सक्सेना
सहायक प्राध्यापक,
विधि विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय

आज जब जिंदगी ने हमसे पूछा कि हमने क्या खोया और क्या पाया
कुछ उत्तर न दे सके हम क्योंकि शायद हमने जो पाया था वही खो दिया

दर्द के साए के पीछे बेवजह दौड़े जा रहे हैं हम
हर खामोशी को चीखों से तोड़े जा रहे हैं हम
जिंदगी की वीरानियों में जब ख्वाबों को बेवजह भटका आए
तो जिंदगी ने फिर पूछा कि हमने क्या खोया और क्या पाया ?....कुछ उत्तर न दे सके हम

वक्त की चढ़ती धूप की तपिश सारी दुनिया को झुलसाये जा रही है
जिंदगी पल पल सीढ़ी चलती चढ़ती मौत के करीब आती जा रही है
आज जब डरा गया एक धुंधला सा साया
तो जिंदगी ने फिर पूछा कि हमने क्या खोया और क्या पाया ?....कुछ उत्तर न दे सके हम

रिश्तो की मासूमियत कहां खोती जा रही है
ऐसा लगता है कि
जैसे गहराइयों में खोकर खत्म होती जा रही है
आज जब अकेलापन फिर गहराया
तो जिंदगी ने फिर पूछा कि हमने क्या खोया और क्या पाया ?....कुछ उत्तर न दे सके हम

ख्वाबों के बवंडर से आज जब जागे
औंधे मुंह गिरे जब हकीकत के आगे
तो जिंदगी से यह प्रश्न हमने दोहराया
कि हमने क्या खोया और क्या पाया ?.
वह मुस्कुराई और बोली कि
वक्त की ताल पर तू नहीं चल पाई
इसीलिए
जो पाया था वही खो दिया .....
कुछ उत्तर न दे सके हम कुछ उत्तर न दे सके...

****

फ्लाईओवर

- बी आकाश राव
शोधार्थी, हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय

इस पुल के नीचे
नहीं बहती है कोई नदी
बल्कि एक ठहरी हुई सड़क है।
जहाँ रोज बाढ़ आती है
भागती हुई व्यस्त भीड़ की।

इस पुल पर खड़ा होकर कोई बच्चा
नीचे कंकड़ नहीं फेंकता।
ऐसे पुल आधुनिक मानक है
शहरों के बड़े होने के।

अक्सर सोचता हूँ कि इतिहास में बनाये गये
सबसे पहले पुल के निरीक्षण के दौरान
पुल पार करने से पहले अभियंता ने
ठहरकर देखनी चाही होगी
पुल के नीचे बहती हुई नदी।

यह कितनी अजीब बात है
कि बड़ा होता शहर कभी बूढ़ा नहीं होता।
भले ही दिन-रात मरते रहते हैं उसके लोग।
लोग...अब नदी बनते जा रहे हैं
जिनके ऊपर बांध दिये जाते हैं
न जाने कितने सारे पुल।

****

'परिवर्तन'

- सबनम भुजेल
पीएचडी शोधार्थी, हिंदी विभाग,
सिक्किम विश्वविद्यालय

मेरे बाबा
जब काम पर छाता लेकर जाते हैं
तो वापस उनके साथ छाता
कभी घर नहीं आता।
वे भूल जाते हैं उसे घर लाना
और अक्सर भूलने के क्रम में चीजें छूटती चली जाती हैं
जैसे छूट रही हैं हमारी संस्कृति, सभ्यता और भाषा।

भूलना स्वाभाविक हो सकता है
लेकिन जब चीजें छूट जाती हैं
तो प्रलय की स्थिति बनने लगती है
जैसे नदियाँ भूल जाती हैं बहना
हवा भूल जाती है धड़कना
और
पेड़ भूल जाता है साँसे लेना।
ये सारी चीजें भूलने के क्रम में छूट जाती हैं
तो होती है क्रांति
'स्वयं' के परिवर्तन की।

तब कहीं छूटी और भूली हुई चीजें
करने लगती हैं संघर्ष
उसी तरह जिस तरह बाबा के छतरी भूलने पर भी
कोई छोड़ जाता है उसे घर तक।

****

जिंदगी चलती रहती हैं

- प्रियंका कुमारी
शोधार्थी, भूविज्ञान विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय

कुछ हालत से मजबूर, कुछ किस्मत से हारे,
फिर भी चेहेरे पर मुस्कुराहट बनी रहती है,
हौसलों और उम्मीदों के सहारे, जिन्दगी चलती रहती है।

बचपन, जवानी और बुढापे की सारी परेशानी
सबकी है अपनी अलग-अलग कहानी,
उम्र के हर दौर में जिन्दगी, जीने का सलिका सिखाती है,
मासुमियत, समझदारी और तजुर्बे के साथ, जिन्दगी चलती रहती है।
जीवन की डगर में, कभी हार से मायुस हुए हैं हम, तो कभी जीत की बेहद खुशी हुई है,
कभी दुःखो का पहाड़ टुटा है, तो कभी सुखों से घर जगमगा उठा है,
अपनी खुशी के मौके पर, सबको मिठाई बटवाया है, तो कभी चेहरे पर मुस्कान
दिखाकर अपने आँसू और दर्द को भी छुपाया है।

यह जो वक्त है न, नदी की धारा के समान तेज बहती रहती हैं, जिन्दगी चलती रहती है।
इस उतारचढ़ाव भरी जिन्दगी में, हम सब कुछ समेटे आगे बढ़ते चले गए,
अब तक के इस सफर में, कुछ से रिश्ते टुटे, तो कई हमारे अपने बन गए,

जिन्दगी के सफर में किसी का साथ छुटा, तो कोई हमारी जिन्दगी का हिस्सा बन गया,
उनकी यादें, उनकी कही बाते ही हमें सम्भाले रखती हैं, जिन्दगी चलती रहती है।
जीवन के हर मोड़ पर, कभी रोना है तो कभी हँसना है,

कभी सब हाथ थामे, हौसला बढ़ाते रहेंगें,
तो कभी हिम्मत कर के अकेले ही आगे बढ़ना होगा,
बस खुद से यह वादा करना हैं हमें, टूटने ना देना हैं खुदको कभी,
अँधेरी रात के बाद, हमेशा नई सुबह रोशनी के साथ, नई आशा लेकर आती है,
जिन्दगी चलती रहती हैं, जिन्दगी चलती रहती है।

****

माँ–एक एहसास

- सरिता तिवारी
निम्न श्रेणी लिपिक (स्थापना)
सिक्किम विश्वविद्यालय

कभी माँ को भी मायका सा लगने दो,
ठीक है, यह उसका घर है, ... हाँ उसी का घर है।
पर,
फिर भी कभी माँ को ये घर मायका सा लगने दो ॥
जागने दो कभी उसे भी देर से
नहाने का समय दो जब बाई छुट्टी पर हो,
घर की छोटी- छोटी समस्याओं से उसे भी कभी मुक्ति दो,
कभी माँ को भी यह घर, मायका सा लगने दो॥
आज बना लेने दो सब्जी उसकी पसंद की अपनी,
अधिक नहीं, बस थोड़ी सी, मदद कर दो तुम भी कभी,
उसके पसंद-नापसंद पर जरा तुम ध्यान दो,
कभी माँ को भी ये घर, मायका सा लगने दो॥
कभी सुबह उसके लिए भी चाय बना लाओ,
पास बैठ कर कभी अपने मन की बात किया करो,
कभी उसकी बातें भी ध्यान से सुन लो,
अपना बड़प्पन उसे भी कभी महसूस करने दो,
कभी माँ को भी ये घर, मायका सा लगने दो॥

****

मुंतज़िर

- सोवन दत्ता
तकनीकी सहायक
रसायनिकी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय

तब तुम रोशनी बन के आना, हम धूप बन जाएंगे ;

तुम खुशियाँ सहलाना, हम मुख़्तसर - एक मुलाक़ात बन जाएंगे।

तब तुम बारिश बनके आना, हम सावन बन जाएंगे;

तुम जुल्फें लहराना, हम उन बालों के तले अपना शहर बनाएंगे।

तब तुम पतझर बनके आना, हम सूखी पत्ती बन जाएंगे;

तुम अपनी महक बिखेड़ना, हम उस खुशबू की तलाश में एक राहगीर बन जाएंगे।

तब तुम ओस बनके आना, हम कोहरा बन जाएंगे;

तुम मेरे तक़दीर बन जाना, हम अनकही एक बात बन जाएंगे।

तब तुम फूल बनके आना, हम वसंत बन जाएंगे;

तुम आंखों से मुस्कुराना, हम तुम्हारी निगाहों के साहिल बन जाएंगे

कुछ न हो तो तुम हवा बनके आना, हम हवा का एक झोंका बन जाएंगे;

एक दफा तुम आओ तो सही, दिलों को संवारते हुए - हम एक जिंदगी बन जाएंगे।

****

मंज़िल और मसाफ़त

-मिलीशा महापात्र
बी.टेक, अंतिम वर्ष
इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, सिक्किम

निकले है हम मंज़िल की चाह में,
आगे कदम बढ़ाते ज़िन्दगी की राह में
ठान लिया है अब मन में पक्का इरादा,
खुद से बेहतर बनने का किया है खुद से वादा।

वक़्त की नज़ाकत ने,
छीन ली है शरारतें
उम्मीदों भरे वादों ने चुरा लिए है आज के पल,
ताकि हम बेहतर बना सके हमारा आने वाला कल ।

आँखों में नमी , होठों पे मुस्कान ,
दिल में अलम और हाथों में कलम
सामने किताब और उसमें छिपे हुए ख्वाब,
अब यही बन गयी थी अपनी पहचान।

उस नूर की तलाश में ,
छोटी छोटी खुशियां कर दी थी कोसों दूर
मगर उस क़ुर्बानी की कीमत होगी कामयाबी ,
कड़वे तानो पर हमेशा लग जाएगी चाबी।

फिर खुलेगी क़िस्मत की तिजोरी,
तक़दीर गाएगी जश्नकी लोरी
मेहनत सजाएगी सर पे ताज,
तब चारो और गूंजेगी सफलता की आवाज़।

****

इक्कीसवीं सदी की शुभ घड़ी

- विद्या छेत्री
पीएचडी शोधार्थी, हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय

कल थे साथ हम
आज अकेले हो गए,
बदला केवल दुनिया नहीं
हम स्वयं भी बदल गए...
समय के साथ अकेलापन ही रास आया
मतलबी दुनिया से अकेलापन ही सबको भाया।
सबने सुनी अपनी, सोची अपनी
कोई किसी के लिए आगे न आया,
मर रहे थे भाई-बंधु
थी सबको अपनी ही सुरक्षा की माया।
मोह के बंधन से मुक्त न हो सके
एक दूसरे के लिए कोई खड़े न हो सके।
भाई-भाई से लड़ गए
संपत्ति के लिए दुश्मन बन गए।

'वसुधैव कुटुंबकम्' का मूल मंत्र सब भूल गए।
सांप्रदायिकता के नाम पर भीड़ गए,
पूर्वजों के आदर्शों की मिट्टी पलित कर दी।
'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की
अखंडता को खंडित कर गए।
****

कलियुग

- ऋतु रानी,
शोधार्थी, भूविज्ञान विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय

आओ आओ देखो देखो, अरे आओ आओ देखो देखो
कलयुगी बाबा आए हैं, साथ निवारण लाए हैं,,
ना होगा अब कोई फेल, ना होगी अब किसी को जेल!!!
बारिश की चाहत में मिला तांत्रिक को बुलावा
अब तो होगा झिंगालाला झिंगालाला!!!
उस अभागन को कौन समझाए ?
अब उस अभागन को कौन समझाए ?
कि लड़का लड़की होने में क्रोमोज़म काम आए!!!
इसमें ना कोई डॉक्टर ना ही कोई तांत्रिक काम आए..

बाप के मरने पे बेटा रोया, सबकुछ खोया,,
उनके बिना वो अब ना रह पाएगा,,
नवनिर्मित मकान बेच चला जाएगा!!!

जनाब, जनाब!!!
कलियुग में इसे प्यार न समझिएगा,
ये प्यार नहीं दुनियादारी है
होमलोन चुकाना भारी है.
बाप के मरने पे पेंशन बंद हो जाएगी
छोटी तनख़्वाह में अब किश्त कहाँ चुक पाएगी ?

कलियुग ने सबको जकड़ रखा है,
शिष्टाचार तो यारो कबका मर चुका है..
कुर्सी पे बैठे अफसरों के निकल गए हैं तोंद,,
सर खुजाते सोचते हैं करके आंखें बंद
कि करे कैसे ऑडिटरो के मुँह बंद
भ्रष्टाचार की भूख बढ़ गई है
मुझे तो तेरी लत लग गई है,, मुझे तो तेरी लत लग गई है!!!

रिश्तों का भी वो कत्ल कर गया है,,
चांद सितारों से भी आगे बढ़ गया है,,
अपने ही जमीर से वो डर गया है..
कलियुग इंसान पर भारी पड़ गया है,,
कलियुग इंसान पर भारी पड़ गया है..

****

प्रकृति रंग ऋतुओं में : जैविक खेती

- दीपक कुमार ठाकुर
प्रयोगशाला परिचारक,
प्रणाली प्रबंधन अनुभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय

सिक्किम के खेतो में
जैविक खेती की रोशनी
अनुशासन और विवेक के साथ
फसलों की उम्र बढ़ती।
जैविक खेतो से
पेड़-पौधो को हुनर मिलती
पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण
सब की कृपा से ही जीवन मिलती।
सिक्किम में जैविक खेती
खेतों में उन्नाव का श्रम
समृद्धि और खुशहाली का स्वरूप
सबके जीवन में है वो प्यार।
जैविक खेती से
प्रकृति की हुनर मिलती
मनुष्य के जीवन के लिए
सफलता और समृद्धि की उम्र बदती।
****

धरोहर :–

कामायनी

– जयशंकर प्रसाद

चिंता – भाग 1

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह
एक पुरुष, भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय प्रवाह।
नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन,
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन।

दूर दूर तक विस्तृत था हिम, स्तब्ध उसी के हृदय समान,
नीरवता-सी शिला-चरण से, टकराता फिरता पवमान।

तरूण तपस्वी-सा वह बैठा, साधन करता सुर-श्मशान,
नीचे प्रलय सिंधु लहरों का, होता था सकरूण अवसान।

उसी तपस्वी-से लंबे थे, देवदारु दो चार खड़े,
हुए हिम-धवल, जैसे पत्थर, बनकर ठिठुरे रहे अड़े।

अवयव की दृढ माँस-पेशियाँ, ऊर्जस्वित था वीर्य्य अपार,
स्फीत शिरायें, स्वस्थ रक्त का, होता था जिनमें संचार।

चिंता-कातर वदन हो रहा, पौरूष जिसमें ओत-प्रोत,
उधर उपेक्षामय यौवन का, बहता भीतर मधुमय स्रोत।

बँधी महावट से नौका थी, सूखे में अब पड़ी रही,
उतर चला था वह जल-प्लावन, और निकलने लगी मही।

निकल रही थी मर्म वेदना, करूणा विकल कहानी सी,
वहाँ अकेली प्रकृति सुन रही, हँसती-सी पहचानी-सी।

“ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व-वन की व्याली,
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण, प्रथम कंप-सी मतवाली।

हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खलखेला
हरी-भरी-सी दौड-धूप, ओ जल-माया की चल-रेखा।
इस ग्रहकक्षा की हलचल -री तरल गरल की लघु-लहरी,
जरा अमर-जीवन की, और न कुछ सुनने वाली, बहरी।

अरी व्याधि की सूत्र-धारिणी -अरी आधि, मधुमय अभिशाप
हृदय-गगन में धूमकेतु-सी, पुण्य-सृष्टि में सुंदर पाप।

मनन करावेगी तू कितना? उस निश्चित जाति का जीव
अमर मरेगा क्या? तू कितनी गहरी डाल रही है नींव।

आह घिरेगी हृदय-लहलहे, खेतों पर करका-घन-सी,
छिपी रहेगी अंतरतम में, सब के तू निगूढ धन-सी।

बुद्धि, मनीषा, मति, आशा, चिंता तेरे हैं कितने नाम
अरी पाप है तू, जा, चल जा, यहाँ नहीं कुछ तेरा काम।

विस्मृति आ, अवसाद घेर ले, नीरवते बस चुप कर दे,
चेतनता चल जा, जड़ता से, आज शून्य मेरा भर दे।«

“चिंता करता हूँ मैं जितनी, उस अतीत की, उस सुख की,
उतनी ही अनंत में बनती जात, रेखायें दुख की।

आह सर्ग के अग्रदूत, तुम असफल हुए, विलीन हुए,
भक्षक या रक्षक जो समझो, केवल अपने मीन हुए।

अरी आँधियों ओ बिजली की, दिवा-रात्रि तेरा नर्तन,
उसी वासना की उपासना, वह तेरा प्रत्यावर्तन।

मणि-दीपों के अंधकारमय, अरे निराशा पूर्ण भविष्य
देव-दंभ के महामेध में, सब कुछ ही बन गया हविष्य।

अरे अमरता के चमकीले पुतलो, तेरे ये जयनाद
काँप रहे हैं आज प्रतिध्वनि, बन कर मानो दीन विषाद।

प्रकृति रही दुर्जेय, पराजित, हम सब थे भूले मद में,
भोले थे, हाँ तिरते केवल सब, विलासिता के नद में।

वे सब डूबे, डूबा उनका विभव, बन गया पारावार
उमड़ रहा था देव-सुखों पर, दुख-जलधि का नाद अपार।«

“वह उन्मुक्त विलास हुआ क्या, स्वप्न रहा या छलना थी
देवसृष्टि की सुख-विभावरी, ताराओं की कलना थी।

चलते थे सुरभित अंचल से, जीवन के मधुमय निश्वास,

कोलाहल में मुखरित होता, देव जाति का सुख-विश्वास।

सुख, केवल सुख का वह संग्रह, केंद्रीभूत हुआ इतना,
छायापथ में नव तुषार का, सघन मिलन होता जितना।

सब कुछ थे स्वायत्त,विश्व के-बल, वैभव, आनंद अपार,
उद्वेलित लहरों-सा होता, उस समृद्धि का सुख संचार।

कीर्ति, दीप्ति, शोभा थी नचती, अरुण-किरण-सी चारों ओर,
सप्तसिंधु के तरल कणों में, द्रुम-दल में, आनन्द-विभोर।
शक्ति रही हाँ शक्ति-प्रकृति थी, पद-तल में विनम्र विश्रांत,
कँपती धरणी उन चरणों से होकर, प्रतिदिन ही आक्रांत।

स्वयं देव थे हम सब, तो फिर क्यों न विश्रृंखल होती सृष्टि?
अरे अचानक हुई इसी से, कड़ी आपदाओं की वृष्टि।

गया, सभी कुछ गया,मधुर तम, सुर-बालाओं का शृंगार,
ऊषा ज्योत्स्ना-सा यौवन-स्मित, मधुप-सदृश निश्चित विहार।

भरी वासना-सरिता का वह, कैसा था मदमत्त प्रवाह,
प्रलय-जलधि में संगम जिसका, देख हृदय था उठा कराह।«

“चिर-किशोर-वय, नित्य विलासी, सुरभित जिससे रहा दिगंत,
आज तिरोहित हुआ कहाँ वह, मधु से पूर्ण अनंत वसंत?

कुसुमित कुंजों में वे पुलकित, प्रेमालिंगन हुए विलीन,
मौन हुई हैं मूर्छित तानें, और न सुन पडती अब बीन।

अब न कपोलों पर छाया-सी, पडती मुख की सुरभित भाप
भुज-मूलों में शिथिल वसन की, व्यस्त न होती है अब माप।

कंकण क्वणित, रणित नूपुर थे, हिलते थे छाती पर हार,
मुखरित था कलरव, गीतों में, स्वर लय का होता अभिसार।

सौरभ से दिगंत पूरित था, अंतरिक्ष आलोक-अधीर,
सब में एक अचेतन गति थी, जिसमें पिछड़ा रहे समीर।

वह अनंग-पीड़ा-अनुभव-सा, अंग-भंगियों का नर्तन,
मधुकर के मरंद-उत्सव-सा, मदिर भाव से आवर्तन।

****

केशव की लेन्स से

- केशव कुमार बिशुंकेय
प्रयोगशाला सहायक
कंप्यूटर अनुप्रयोग विभाग

1. बच्चा लामा, इंचे गुम्पा

2. ईगल्स क्रैग, व्यू पॉइंट, कर्सियांग

3. फेदांग, उत्तरी सिक्किम

4. माने

5. नेपाली नृत्य, इंचे गुम्पा

6. रुप्पी पक्षी, मनन केंद्र

अवध से अवधी बोली की विकास यात्रा

- अवनीश द्विवेदी, छात्र
विधि विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय

अवधी भाषा जैसा कि नाम से हम जानते हैं, उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र से सम्बन्धित है। उत्तर प्रदेश के जो क्षेत्र अयोध्या के आस पास का है, उसे ही अवध कहा गया है। इस क्षेत्र में लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, गोंडा, बहराइच, प्रतापगढ़, सुलतानपुर, अमेठी, बाराबंकी, अयोध्या, फतेहपुर, प्रयागराज, जौनपुर, मिर्जापुर,आदि जिलों से मिलकर बना है। इसे कोसली, बैसवाडी, आदि उपनामों से भी जाना जाता है। अवध शब्द अयोध्या से निकला है- ऐसा प्रायः भाषा विद्वान मानते हैं। अयोध्या के रूप मे जो नगर विख्यात है वह नगर भी इसी भाषा के केंद्र में स्थित है। काव्य भाषा के रूप में अवधी के दो प्रकार मिलते हैं- ठेठ अवधी और साहित्यिक अवधी।

अवधी भाषा के विकास को लेकर कुश भाषाविदों मे विवाद की स्थिति है- दरअसल जिस कल मे मध्यकालीन आर्यभाषाएं जन्म ले रही थी, उस आरंभिक काल में पूर्वी उत्तर प्रदेश का यहक्षेत्र कोसल के नाम से विख्यात है।बौद्ध साहित्य और जैन साहित्य के ग्रंथों में कोसल का की स्थानों पर लिया गया है। इस क्षेत्र में लगभग ईसा से दो सौ वर्ष पूर्व स लेकर ईसा की दूसरी शताब्दी तक अर्धमागधी प्राकृत जनभाषा का स्वरूप मिलता है। इस प्रक्रिया में जो जन भाषाएं विकसित हुई , उनमें से एक का नाम कोसली पड़ा। अपभ्रंश अवहट्ट काल (छठी से बारहवीं सदी) के मध्य जब आधुनिक आर्य भाषाओं के जन्म की पृष्ठभूमि बनी।तब यही कोसली अथवा उसकी कोई समकालीन समीपवर्ती लोकभाषा स्थिर होकर अवधी के उद्गम का आधार बन गई।एस संबंध में अभी तक कोई प्रामाणिक बात तो नहीं कही जा सकती है,पर प्रायः यह संभावना व्यक्त की जा सजती है की कोसली का आधुनिक रूप ही अवधी है।

"भाषा के रूप में अवधी का पहला प्रामाणिक उल्लेख अमीर खुसरो की 'खालिक बारी' में मिलता है| इस रचना में खुसरो ने अपने समय 1253 से 1325 ईसवी की भारतीय भाषाओं को बताते हुए उसमें अवधी को भी सम्मिलित किया है। हिंदी की एक बहुत पुरानी रचना रोडा कृत राउल वेलि मे साहित्यिक प्रयोग का उदाहरण मिलता है।" "1"

"विदवानों ने इसका रचनाकाल 11 वीं शताब्दी के आस पास का माना जाता है।खुसरों का समय 1253-1325 ईसवी तक मन जाता है।अतः अवधी एक भाषा के रूप में 13 वीं सदी के अंत में संभवतः स्थापित हो चुकी थी। इसमें पूर्व में रोड़ा कृत राउलवेलमेकन्नौज की नायिका के प्रसंग मे तथा दामोदर पंडित करीत उक्ति व्यक्ति प्रकरण में अवधी के निर्माणकालीन स्वरूप का परिचय मिलता है, पर एन दोनों रचनाओं का कल प्रमाणिक रूप से ज्ञात नहीं हैं। 1379 ईस्वी में मौलाना दाऊद ने 'चंदायन' की रचना की। जिसकी भाषा के रूप में स्थापित करने वाले पहले कवि मौलाना दाऊद ही हैं। यह उस काल की अवधी है जिसमें संस्कृत शब्दों का प्रयोग कम हुआ है।" "2"

"गोपाल राय के शब्दों में मौलाना दाऊद का सबसे अधिक महत्व इस बात में है कि उन्होंने एक बोलचाल की भाषा को अपनी प्रतिभा से महत्वपूर्ण काव्य भाषा का रूप दे दिया। उन्होंने अपने काव्य के लिए पूर्ववर्ती और समकालीन चरित काव्य तथा फारसी की मसनवी शैलीके मिले जुले काव्य रूप का प्रयोग किया।मौलाना दाऊद को अपनी पूर्ववर्ती और समकालीन अपभ्रंशकाव्य परंपरा के साथ फारसी काव्य परंपरा का अच्छा ज्ञान था, जिनके मिश्रण से उन्होंने अपनी काव्य शैली निर्माण किया था अवधी को काव्य भाषा के रूप मे स्थापित करने का श्रेय सूफी कवियों को है। इस परंपरा को कुतुबन, मँझन, जायसी, उस्मान आदि ने आगे बढ़ाया। दूसरा – हिन्दू कवियों के प्रेमपरक काव्यों की पश्चिमी परंपरा से प्रेरित अवधी और राम भक्त कवियों की साहित्यिक अवधी।" "3"

"साहित्यिक भाषा के रूप मे अवधी के तीव्र विकास संबंध एक सुयोग से है भारत की विभिन्न लोक भाषाओं मे संस्कृत परंपरा से हि विकसित परम कथाओं को रचने की प्रवृति काफी अधिक व्यापात थी| ऐसी पें कथाओं मे उर्वशी – पुरुरवा ,आख्यान,उषा-अनिरुद्ध कथा , मालती – माधव कथा आदि काफी प्रचलित थी| 14 वीं सदी में सुयोग यह हुआ की इन प्रेमाख्यानों के लिए अवधी भाषा सुर दोहा-चौपाई शैली रूढ सी हो गई | यह सुयोग होने का मूल कारण यह था की पूर्वी उत्तर भारत मे रहने वाले सूफी प्रेमाश्रयी संतों ने अपने राहस्यवादी सिद्धांतों की अभिव्यक्ति भरत में पूर्णतः प्रचलित प्रेमाख्यानों के माध्यम से करनी आरंभ की | इस सुयोग ने अवधी को हिंदी देश की सभी लोकभाषाओं मे शिरोमणि बना दिया| अतः पहली रचना जो पूर्णतः अवधी में हैं और जिसने अवधी को एक झटके में लोकभाषा के पद से उठाकर साहित्यिक भाषा के रूप मे महत्व-

पूर्ण भूमिका निभाई|" "4"

मुल्ला दाऊद की चंदायन है, इस रचना में ठेठ अवधी का प्रयोग किया गया है इसका प्रमाण चंदायन है, कवि स्वयं चंदायन के प्रभाव में कहता है कि - "दाऊद कवि जो चांदागाई,जेई रे सुना सो गा मुरझाई ||" "5"

"मध्यकाल से अवधी के काव्य भाषा के रूप में विकसित होने के पीछे एक और घटना का उल्लेख महत्वपूर्ण है| यह उल्लेख यह है कि 15 वीं सदी में विशिष्टद्वैतावादीदार्शनिक आचार्य रामानुज के शिष्य रामानंद द्वारा रामावत समप्रदाय का प्रवर्तन | इस वैचारिक आंदोलन का उत्तर भारत पर गहरा प्रभाव पड़ा कि एक ओर कबीर जैसे निर्गुण कवि रामकथा प्रसंग अपने काव्यों में समाविष्ट करने लगे तो दूसरी ओर रामकाव्याधारा का ही प्रवर्तन हो गया | यह काव्याधरा अवधी में ही पुष्पित- पल्लवित हुई और इस धारा के प्रधान कवि तुलसीदास हैं जिनकी सर्वाधिक प्रमुख कृति रामचरितमानस हिंदी ही नहीं विश्व की सभी भाषाओं में सफलतम तथा महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक है |" "6"

अब तक अवधी में काव्य रचना करने वाले कवि प्रायः उस सूफी परंपरा से थे जिनको कुछ हद तक अपभ्रंश और फारसी काव्य परंपरा से अनभिकत थे | तुलसी के रूप में अवधी को एक ऐसा कवि मिला जिसने संस्कृत परम्परा का भी गहरा अध्ययन किया था । शुक्लजी कहते हैं कि -" जायसी की पहुँच अवध में प्रचलित लोकभाषा के भीतर बहते हुए माधुर्य स्त्रोत तक ही थे, पर गोस्वामीजी की पहुंच दीर्घ संस्कृत कवि परम्परा द्वारा परिपक्व चासनी के भंडार तक भी पूरी-पूरी थी|""7"

तुलसी और प्राकान्तर से राम काव्यधारा के कवियों की काव्यभाषा की मूल विशेषता जो उन्हें सूफियों के काव्य से अलग करती है। तत्सम शब्दों का प्रचुर प्रयोग है। ये तत्सम शब्द अवधी को संस्कृत नहीं बनाते क्योंकि गोस्वामीजी तत्सम शब्दोतत्सम रूप में नहीं बल्कि उनके सम्भावित अवधी रूप में करते हैं |

सन्दर्भ-ग्रन्थ :

1. डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, अवधी काव्यधारा, अमित प्रकाशन, लखनऊ, पृ. 31
2. वही, पृ. 4 4
3. अवधी काव्य धारा पृ 8
4. वही. पृ 3
5. वही. पृ 5.
6. वही, पृ. 6.
7. आधुनिक अवधी काव्य, डॉ. महावीर प्रसाद उपाध्याय, डॉ. राम सनेहीलाल शर्मा यायावर, पृ 8

****

पुस्तक समीक्षा :-

द्वंद्वों से मुक्ति का रास्ता : आज़ादी मेरा ब्रांड

- ज्ञानवती कुमारी साह
शोधार्थी, हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय

आज़ादी तीन वर्णों का यह मेल कितना कुछ सोचने पर मजबूर करती है। आज अगर ये शब्द न होते तो शायद हम आज़ाद भारत के नागरिक नहीं अपितु अपने देश में विदेशी ताकतों के अधीन होते। पर क्या सच में हम आज़ाद देश के नागरिक हैं? इस किताब को पढ़ते हुए निरंतर जहन में यही सवाल उभरता है। इस प्रश्न में द्वन्द्व भी है, क्योंकि यदि इस पुस्तक की लेखिका पूरी तरह परवशता का शिकार होती तो शायद यह पुस्तक हमारे मध्य उपलब्ध न होता। अनुराधा बेनीवाल जो हरियाणा के रोहतक की है। जिन्होंने 15 वर्ष की आयु में ही शतरंज के खेल में राष्ट्रीय चैम्पियनशीप अपने नाम किया और कैसे यायावरी आवारगी की राह पर निकाल पड़ी यह हम उनकी पुस्तक के जड़िए समझ सकते हैं।

अक्सर एक लड़की के मन में तमाम तरह के सवाल होते हैं और वह उन प्रश्नों के उत्तर तलाशने की कोशिश भी करती है, लेकिन उन्हें उनका जवाब मिल नहीं पाता है। उन्हीं प्रश्नों के द्वंद्वों से लेखिका भी गुजरती है कि आखिर ऐसा क्या कारण है कि हम आज़ाद देश के नागरिक हैं फिर भी हम अपने को आज़ाद महसूस क्यों नहीं कर पाते। यहाँ लेखिका इन प्रश्नों को एक स्त्री के स्तर पर स्त्री के लिए सोचती है। सही मायने में कहा जाए तो अनुराधा बेनीवाल केवल और केवल अपनी खुशी अपने गम के बारे में सोच रही है और वह ऐसा इसलिए है कि वह तथाकथित आधुनिक भारतीय समाज का हिस्सा है जहाँ संविधान सबके लिए बराबर का अधिकार प्रदान करती है वहीं हमारा यह समाज एक लड़की के घर से अकेले बाहर निकलने पर तमाम तरह के तंजो से उसका (लड़की) मानसिक मनोबल गिराने का प्रयास करती है। पर अनुराधा का यह यात्रा-वृतांत उन मानसिकताओं पर कुठाराघात करती हुई नजर आती है।

यह किताब एक यात्रा-वृतांत नहीं बल्कि एक यात्रा है ख़ुद का ख़ुद में। आज का आधुनीक समाज जब एक लड़की को घर से बाहर कदम रखने नहीं देता तो हमें आधुनिक कहलाने का कोई अधिकार नहीं है। लेखिका एक मनुष्य के स्तर पर सोचती हुई अपने तार्किक दृष्टिकोण का परिचय देते हुए कहती है कि **"और क्या चाहिए होता है एक लड़की को—घर, नौकरी, गाड़ी, फर्नीचर, कामवाली बाई और जीवनसाथी के अलावा? और कुछ नहीं न! लेकिन वह क्या था जिसे ढूँढने की तड़प मेरे भीतर उबाल रही थी! मैं किस स्वतंत्रता की बात सोच रही थी? क्या थी मेरी निजता? मैं आज़ाद देश की आज़ाद नागरिक होकर भी ख़ुद को आज़ाद महसूस क्यों नहीं कर रही थी? अटकाव कहाँ था? बाधा क्या थी?"** अर्थात् या यों कहें तो भारतीय लड़कियों को बचपन से यही बताया जाता है कि अच्छे घर-वर में ही उनका सुखी जीवन निहित है। परंतु लेखिका के पास तो सबकुछ है फिर भी वो किस सुखानंद के तलाश में थी? इसी सुख और आनंद का वर्णन इस यात्रा-वृतांत **'आज़ादी मेरा ब्रांड'** में है।

अक्सर मनुष्य दूसरे के सुख और दुख और सबसे ज्यादा उसके जिसके वे बेहद करीब है से सुखी और दुखी हो जाता है। पर ऐसा क्यों? क्यों एक आदमी या औरत किसी दूसरे के सुख-दुख से प्रभावित हों? क्यों जब वह खुश हो तो औरों के दुख से दुखी हो जाता है? इसी निजता को तलाशती-भटकती फिरती है अनुराधा बेनीवाल जहाँ केवल उसके अपने सुख-दुख हो कोई उसे किसी भी तरह से प्रभावित न करता हो – **"मेरी कैसी भी खुशी किसी एक करीबी की हरकत से गायब हो सकती थी! मैं समझ नहीं पाती कि अगर मैं वाकई खुश हूँ तो कोई और कैसे मुझे एकदम से दुखी कर जाता है?"** लेखिका जिंदगी की इन गिरहों को सुलझाना चाहती है। वह अकेले बेखौफ़, बिंदास, कभी भी, कहीं भी घूमना चाहती है। और केवल लेखिका ही नहीं भारत की तमाम छोटे-बड़े गाँव-शहरों की तमाम लड़कियों को इस आजादी की आवश्यकता है, जो शायद भारत में कभी नहीं मिलेगी।

लेखिका एक अच्छी लड़की बनना चाहती थी, जो

घर के कार्यों में निपुण होती है, परन्तु रमोना से मिलने के बाद उसके (लेखिका) ये सारे मानदंड प्रश्नों के घेरे में खड़े हो जाते हैं। रमोना एक इटालियन लड़की है जो केवल इक्कीस (21) वर्ष की उम्र में ही आधी दुनिया घूम चुकी है और घरवालों से पैसे लेकर नहीं बल्कि खुद के बल पर। यह बात लेखिका को बहुत हद तक प्रभावित करती है। पर बहुत दिनों तक इस बात पर लेखिका अमल नहीं कर पाती, लेकिन जब वह अपने संबंध में कुछ खटपट महसूस करती है तब वह अपना जॉब छोड़ देने का विचार करती है पर ऑफिस वाले उसे दो महीने के छुट्टी पर भेज देते हैं, उस दौरान वह राजस्थान घूमने पहुंच जाती है और फ्लाविया तथा मार्लुस से मिलती है, वहीं से उसके मन में जो बीज रमोना ने बोया था वह पुष्पित-पल्लवित होने लगता है और वह दुनिया घूमने के बारे में सोचने लगती है।

कुछ सालों बाद वह लंदन गई और यूरोप घूमने का सोचा। हालांकि लेखिका के पास इतने पैसे नहीं हैं और जो लड़की अपना खर्च स्वयं उठाती आयी हो अचानक से किसी पर निर्भर होना उसे अच्छा नहीं लगता। फिर उसने लंदन में किसी भी तरह की मजदूरी करके पैसे कमा कर घूमने का सोचा। वह होटल, कैफै आदि में वेटर का काम से लेकर किसी के घर के कुत्ते की देखभाल करने का काम तक कर पैसे कमाकर घूमना चाहती है। और यहीं से उसके संघर्ष-यात्रा की शुरुआत होती है जहां काम की तलाश में वह लंदन की गली-गली घूम लेती है और जब उसके पास एक हजार पाउंड अर्थात् लगभग एक लाख रुपये जमा हो जाते हैं, तो वह निकल पड़ती है अपनी यायावरी आवारगी के लिए। वह आजादी को न लेने की न तो देने की वस्तु मानती है। वह आजादी को जीने के वस्तु के रूप में देखती है और जीती भी है।

इसी क्रम में वह कई देशों, कई शहरों से गुजरती है और वह उन देशों-शहरों की भाषा-संस्कृति से परिचित न होते हुए भी कुछ अपनापन-सा महसूस करती है। हर जगह की विशेषताएं वह अपने ढंग और अपने नजरिए से प्रस्तुत करती है। इन जगहों में पेरिस, ब्रस्सला, बर्लिन, प्राग, बुडापेस्ट आदि हैं जहाँ वह जाती है एक ऐसे यात्री की तरह जैसे वह उस जगह से पहले से परिचित हो। इन जगहों पर वह खुदको इतना आजाद महसूस करती है कि किसी अनजाने के घर जहां केवल एक बूढ़ा रह रहा है और उस घर के बरसाती में कोई दरवाजा नहीं है चैन की नींद सोती है। एक लड़की के लिए इससे बड़ी आजादी और क्या होगी।

अनुराधा बेनीवाल हम भारतीय लड़कियों के लिए अपने किताब के अंतिम पन्ने पर लिखती है कि **"तुम चलना। अपने गाँव में नहीं चल पा रही तो अपने शहर में चलना। अपने शहर में नहीं चल पा रही तो अपने देश में चलना। अपना देश भी मुश्किल करता है चलना तो यह दुनिया भी तेरी ही है, अपनी दुनिया में चलना। लेकिन तुम चलना।.... तुम चलोगी तो तुम्हारी बेटी भी चलेगी, और मेरी बेटी भी। फिर हम सबकी बेटियां चलेंगी। और जब सब साथ चलेंगी तो सब आजाद, बेफिक्र और बेपरवाह ही चलेंगी। दुनिया को हमारे चलने की आदत हो जाएगी। अगर नहीं होगी तो आदत डलवानी पड़ेगी, लेकिन डर कर घर में मत रह जाना। तुम्हारे अपने घर से कहीं ज्यादा सुरक्षित यह पराई अनजानी दुनिया है।....अपने-आप के साथ घूमना। अपने ग़म, अपनी खुशियाँ, अपनी तन्हाई – सब साथ लिए-लिए इस दुनिया का नायाब ख़जाना ढूंढ़ना।"**

वस्तुतः यह यात्रा-वृतांत हमें रूढ़िवादी समाज के दायरे से बाहर का रास्ता दिखाती है। यह भले ही एक यात्रा--वृतांत हो पर उन तमाम लड़कियों के लिए प्रेरणास्रोत है, जो ऐसी रूढ़िवादिता से मुक्त होना चाहती है, जहां एक लड़की के बलात्कार का दोषी लड़की के कपड़ों और उसके चलने के ढंग को बना दिया जाता है। इसी मानसिकता का प्रतिरोध करती हुई नजर आती है यह किताब। इस किताब का एक प्रसंग है कि एक विदेशी लड़की भारत घूमने आई है, जहाँ लेखिका की मुलाकात उससे होती है साथ ही यात्रा संबंधित कुछ बातें होती है तब उस लड़की यह कथन कि जब इत्तफ़ाकन उसका चीर हरण हो जाए और इस कारण वह गर्भवती हो जाए तो उसकी माँ ने उसे कुछ ऐसी गोलियां दी है, जिसका प्रयोग इस समय करना चाहिए। लेखिका इस बात से हैरान हो जाती है कि क्या कोई ऐसी माँ भी हो सकती है, जो अपनी बेटी के साथ हुई घटना को इतनी सहजता से स्वीकार कर ले और उसके उपाय बताए? अक्सर हमारे भारत में इन सब बातों को एक अलग ही नजरिए से देखा जाता है और सारा दोष लड़की के माथे मढ़ दिया जाता है। इन्हीं सब बातों से मुक्ति का रास्ता है **'आज़ादी मेरा ब्रांड'**। लेखिका जब कहती है कि यह दुनिया तेरे लिए बनी है, इसे देखना ज़रूर। तब यह बात तय हो जाती है कि एक स्त्री खुद को मुक्त देखने के साथ बाकी स्त्रियों की भी मुक्ति की कामना करती है, परन्तु यहां लेखिका कामना नहीं कर रही बल्कि प्रेरित कर रही है । हर उस लड़की को जो अपने-आप को स्वतंत्र महसूस करवाना चाहती है, घूमना चाहती है पूरी दुनिया में अपनेपन के साथ। वह आजाद रहते हुए भी सारे संसार को अपनाना चाहती है। यथा: **"इसमें कुछ पाने के लिए घूमना, कुछ खो देने के लिए घूमना। अपने तक पहुँचने और अपने-आप को पाने के लिए घूमना; तुम घूमना!"**

पुस्तक – आज़ादी मेरा ब्रांड (यात्रा-वृतांत)
लेखिका – अनुराधा बेनीवाल
प्रकाशक – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
पृष्ठ – 187, मूल्य – 199
संस्करण – चौथा संस्करण,

बहादुर सैनिक

- प्रदीप कुमार तमांग
निजी सचिव, केंद्रीय पुस्तकालय
सिक्किम विश्वविद्यालय

आजादी का अमृत महोत्सव और प्रगतिशील स्वतंत्र भारत के 75 गौरवशाली वर्षों के शुभ अवसर पर मैं इस लेख को भारत के उन लोगों को समर्पित कर रहा हूँ, जिन्होंने देश के विकास और इसकी क्रांतिकारी यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

घने बादलों से घिरे आकाश पर बादल गरज रहा था और बिजली चमक रही थी, एक उदास महिला अभी भी जाग रही है क्योंकि वह अपने घर के गलियारे में किसी के आने का इंतजार कर रही है, जबकि उसके आसपास के लगभग सभी पड़ोसी गहरी नींद में हैं। उसके एकांत दृश्य में, उसने अपने बेटे की चीख़ती आवाज़ सुनी उसे'आमा' (माँ) कहते हुए। ।

अजीत का हाल ही में भारतीय सेना में चयन हुआ है। वह अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र है। आर्मी में ट्रेनिंग खत्म होने के बाद उन्हें जम्मू में पोस्टिंग मिली। ड्यूटी ज्वाइन करने से पहले उसने सोचा कि वह अपने बुजुर्ग माता-पिता से मिल आये। उन्होंने 5 दिनों की छुट्टी के लिए अनुरोध किया और अपने माता-पिता से मिलने के लिए अपने पैतृक स्थान गुरुबथान (कलिम्पोंग) की ओर प्रस्थान हुए।

अजीत अपने घर पहुँचते ही उनका स्वागत के लिए उनके वृद्ध माता-पिता और उनके परिजन, मित्र, शुभचिंतक भी वहां स्वागत व अभिनंदन के लिए शामिल हुए।

वहाँ उसकी वृद्ध माँ ने अजीत और अन्य आगंतुकों के लिए विभिन्न खाद्य पदार्थ तैयार किया और सभी को परोसने लगी। अजीत की माँ अपने बेटे के बारे में मन ही मन सोचती है और खुद को गर्वित महसूस करती है। जब अजीत प्रशिक्षण के दौर में था, दोनों माता-पिता आपस में कहते थे कि उनका बुरा समय समाप्त हो गया। वे उत्सुक है कि अजीत को जल्द से जल्द शादी के बंधन में बांध दिया जाएँ ।यह सोचकर कि वे बूढ़े हो गए हैं और उन्हें एक बहू की जरूरत है ताकि बहू उनकी देखभाल कर सके।

दूसरी तरफ अजीत सोच भी नहीं सका कि उसकी पांच दिन की छुट्टी इतनी जल्दी से समाप्त हो गया। । उसके जाने का दिन करीब आ गया। उन्हें अलविदा कहते हुए मां-बाप बेहद दुखी थे । माँ ने भारी मन से अपने बेटे से कहा, 'अजीत अब तुम बड़े हो गए हो'। उन्होंने उसे थपथपाते हुए कहा तुमने एक और जिम्मेदारी उठाई है, अपनी मातृभूमि की जिम्मेदारी। तुमको किसी भी कीमत पर अपनी मातृभूमि की रक्षा करनी होगी ।यह कहकर दोनों ने उसे कसकर गले लगा लिया और उसके माथे पर चूमा।

जैसे अजीत निकलने वाले थे, उसने अपने माता-पिता के पैर छुआ और आशीर्वाद लिया और अपने रिश्तेदारों को सभी से दशहरा में आने का वादा करते हुए जम्मू के लिए रवाना हो गया। वह जम्मू में ड्यूटी ज्वाइन करने पर वह बहुत खुश हुआ क्योंकि उसके कुछ दोस्त कलिम्पोंग से थे और इसी कारण वहाँ खुद को अकेला नहीं महसूस करते थे। वहाँ पहुँचकर उसने अपने माता-पिता को पत्र लिखकर उन्होंने दशहरा में आने की बात दोहराई और हर महीने के पहले हफ्ते में पैसे भेजने लगा।

जब से अजीत काम पर गया है, ऐसा कोई दिन नहीं रहा कि माँ ने उसे सपने में नहीं देखा हो। उसकी माँ हमेशा उसके बेटे के बारे में बात करती है और कभी-कभी खुद भी चिंतित हो जाती है कि वह सही समय पर भोजन कर रहा है या नहीं।

इस तरह दिन बीतते गए अब टीका (दशहरा) के लिए केवल बीस दिन हैं।अजीत की मां इस बार दशई मनाने की तैयारी में काफी व्यस्त हैं। उनकी सक्रियता को देखकर ऐसा लगता है कि यह पहली दशई है जिसे वे मना रही हैं। जब कोई भी व्यक्ति उसके घर आता है तो वह अपने बेटे की शादी के बारे में बताती है और अजीत के साथ जोड़ी बनाने के लिए अच्छी दिखने वाली बहू की पूछताछ करती है।

वह अपने पति से कहती थी, 'इस बार जब अजीत आएगा तो मैं शादी भी तय कर दूंगी।' अजीत के आने के बाद इस बार अजीत कि शादी करवाने की लिए अजीत की माँ ने थान लिया है। उसके पति उसे सलाह देते थे कि "अजीत को पहले आने दो फिर हम इस बारे में तय करेंगे"।

कल टीका का दिन है। अजीत की मां न सिर्फ घर के कामों में व्यस्त है, बल्कि सभी पड़ोसी भी। अजीत की मां ने अपने पति से कहा, अजीत अगर सुबह करीब 6-7 बजे एनजेपी पहुंचता है, तो वह आसानी से टीका लगाने के लिए सही समय पर घर पहुंच सकता है। कलैण्डर के पन्ने पलटते हुए उसने उससे कहा, कल पंडितजी टीका का भी समय निर्धारित कर कर लिया है । कल सुबह 10.30 बजे ठीक समय है।

अगले दिन (टीका के दिन) अजीत की माँ लगभग 3.30 बजे भोर में उठी तब से वह तरह-तरह के खाने की चीज बनाने लगी और वह भी अपने वृद्ध पति को जगाने चली गई।

ताकि रोसइ का काम जल्दी से जल्दी निपटाए जाये! बुजुर्ग होने के कारण उनके रिश्तेदार उनके घर टीका में आशीर्वाद लेने के लिए आते हैं। जब सुबह 8.30 बजे का समय हुआ, तो वे दोनों अपने घर के काम खत्म कर चुके थे और नए कपड़े पहन कर अपने रिश्तेदारों के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

धीरे-धीरे रिश्तेदार और पड़ोसी अजीत के घर जाकर बधाई देने लगे और उनकी मां आशीर्वाद और सेवा में लगी रहीं। लेकिन उसका मन अजीत के आने की ओर है, दीवार पर लगी घड़ी को देखकर वह खुद बड़बड़ाती है "क्यों उसे देर हो गई, वह अच्छी तरह जानता है कि आज टीका है और उसे सही समय पर पहुंचना है। लेकिन खुद को सांत्वना देती हुई बोली कि हो सकता है ट्रेन एनजेपी में देरी से पहुंची होगी। वह बार-बार सड़क पर देखती रही और जब भी उसे सड़क पर हॉर्न की आवाज सुनाई देती है तो वह यह सोचकर खुश हो जाती है कि अजीत पहुंच गया है। अजीत के इंतजार में, दोपहर का समय 2.30 हुआ, वह निराश हो गई और उसके आने की खुशी की जगह कुछ अजीव सी अनहोनी की आशंका से मन व्याकुल होने लगा।

सड़क के पहले मोड़ पर अचानक हॉर्न बजने की आवाज़ सुनाई दी, अजीत की माँ की नज़र उस पर पड़ी और उन्होने एक सैन्य शक्तिमान वाहन और एक जिप्सी वाहन को घर की ओर आने वाली सड़क पर चढ़ते देखा। अजीत की मां ने भी वाहनों को उनके घर की ओर आते देखा। धीरे-धीरे गाड़ियाँ उसके घर के सामने रुकीं और शक्तिमान से दो जवान उतरे और फौजी की पोशाक में एक आदमी जिप्सी वाहन से उतरे और दो अन्य जवानों के साथ अजीत के घर की तरफ आने लगे। वृद्ध माता-पिता और अन्य रिश्तेदार उत्सुकता से देखते रहे और तभी एक ने पूछा कि सैन्य वाहन वहां क्यों खड़े हैं । उस वाहन से एक फौजी अजीत के पिता के पास आया और पूछा "क्या आप अजीत के पिता हैं। वृद्ध बूढ़ा पिता ने घबराहट से कहा, हां मैं अजीत का पिता हूं। क्या हुआ और आप सब यहाँ क्यों आए, सब कुछ ठीक है न । फौजी ने बात को टालते हुए पूछा कि आपके घर में इतने लोग क्यों आए हैं।

अजीत की माँ ने कहा, "साहेब आज हमारी दशई (दशहरा) है" और यहां खड़े लोग हमारे सभी रिश्तेदार हमसे आशीर्वाद लेने आए हें। क्या कहें साहेब, आज हमारी दशई है, हम खुश नहीं हैं, मेरे बेटे अजीत ने हमसे वादा किया था कि वह टीका के दिन जरूर पहुंचेगा। हम सुबह से उसके आने का इंतजार कर रहे हैं, लेकिन वह अभी तक नहीं पहुंचा है। मुझे लगता है कि उसे छुट्टी नहीं मिली होगी। वह हमारा एकमात्र बेटा है। साहेब, अजीत ने ऐसा कभी नहीं किया, वो भी दशहरे के समय में।

फौजी ने अजीत की मां की भावुकता को दरकिनार करते हुए चुपके से अजीत के पिता के पास गए और उनको गाड़ी के पास ले गया और कहने लगे आपके बेटे ने हमारे देश के लिए बहादुरी का काम किया, हम सभी को आपके बेटे पर गर्व है। उन्होंने सीमा पर हमारे दुश्मनों के साथ निर्भीकता से और जोरदार तरीके से लड़ाई लड़ी और दो आतंकवादियों को मार गिराया। उग्रवादी का पीछा करते हुए पर उसे "बीर गति" मिल गई। फौजी की बात सुनकर बूढ़े पिता लगा मानों पैरो तले जमीन खिसाग गई और वो जोड़ जोड़ से राणे लगे। कंधे पर हाथ रखकर उन्हें सांत्वना देते हुए फौजी ने कहा चिंता मत करो हम सब आपके साथ हैं। यह कहकर फौजी ने जवानों को अजीत के शव को वाहन से नीचे उतारने का आदेश दिया और अजीत के शव को उनके घर के आँगन में अंतिम दर्शन के लिए रखा गया। अजीत की माँ को विश्वास नहीं हुआ.... कुछ देर अजीत की शव पर एकटक देखती रही और फिर बदहवास सी रोने लगी। वह झट से कमरे के अंदर भागी और विलाप करने लगी !अजीत हमारी इकलौता बेटा था उसको भी हमने खो दिया! अब हम किसको अजीत बोल के पुकारू ऐसा कहते हुए रोई और चिल्लाई अजीत की माँ! अपनी छाती पिटते हुए अजीत की माँ कहने लगे भगवान ने भी हम पर दया नहीं की! भगवान ने हमारा बेटा छीन लिया है।

आस-पास खड़े सभी लोगों में भावुकता छा गई। जब अजीत की माँ की हालत बिगड़ने लगी, तो उसके बुजुर्ग पति ने उसे कहा कि चिंता मत करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ! अजीत मेरा भी बेटा था, मैंने भी उसे हमेशा के लिए खो दिया। अजीत की माँ को सांत्वना देते हुए उन्होंने कहा कि तुमने एक बार अजीत से कहा था कि किसी भी कीमत पर शत्रु से अपनी मातृभूमि की रक्षा करें। वही अजीत ने मातृभूमि के लिए किया। अजीत ने तुम्हारी सलाह को ध्यान में रखते हुए ऐसा ही किया, हमें उस पर गर्व होना चाहिए। अजीत के पिता फौजी के और देखते हुए अपनी पत्नी को सांत्वना देते हुए आगे कहा साहब ने हमें आश्वासन दिया है कि वे हमारी देखभाल करेंगे। भारी मन से अजीत की माँ हिम्मत करके कहा और उदास हालत में उसने अपने पति से कहा, मुझे अजीत के माथे पर टीका लगाने दो, क्योंकि मेरा ऐसा न करने पर हमारा अजीत मुझे कभी माफ नहीं करेगा। यह कह कर वह उठ खड़ी हुई और अजीत के शव के माथे पर टीका लगा दी और जोर-जोर से रो शव को कसकर गले से लगा लिया और चीखने लगी अजीत, अजीत, अजीत बोलो अजीत बोलो, अजीत बोलो अजीत, हम तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

जब अजीत के कमरे में सुबह 2.00 बजे का समय पेंडुलम घड़ी की आवाज टोंग टोंग करते सुनाई दी गलियारे पर खड़ी एक उदास महिला ने अपने आंसू बहाए और घड़ी की ओर देखते हुए खुद को संतुष्ट किया और मन ही मन थान लिया अजीत अब उनके साथ नहीं है और वह पश्चाताप के साथ अपने बिस्तर पर चली गई।

****

"कुछ पल का रिश्ता, बिछड़ना हमेशा के लिये"

- विवेक मोक्तान
सिस्टम एनालिस्ट
सिक्किम विश्वविद्यालय

लगभग 23 साल अपने घर से दूर रहने के कारण एक बात से मैं बहुत अच्छी तरह वाकिफ हो गया हूं कि हम अपनी तथाकथित जीवन यात्रा में बहुत सारे अस्थायी लोगों से मिलते हैं। ये हमारे सहकर्मी हो सकते हैं, एक सहयात्री या कोई ऐसा व्यक्ति जिससे हम केवल अपने किराने की दुकान पर ही मिलते हैं, अथवा ये ऐसे भी होते हैं, जिनसे हम सिर्फ इसलिए परिचित हो जाते हैं क्योंकि हम घर का एक ही रास्ता साझा करते हैं या यहां तक कि एक ऐसे व्यक्ति जो एक ही जिम के सह-सदस्य है और बस एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराते हैं।

एक दिन मैं ऑफिस से पैदल ही अपने रूम जा रहा था, रास्ते में मेरा भेंट एक ऐसे व्यक्ति से हुआ, जो पिछले साल कुछ समय के लिए मेरा जिम के साथी सदस्य रहें। वो सज्जन उड़ीसा के रहने वाले थे और गंगटोक में एक दवा कंपनी में कार्यरत थे। हम दोनों जिम में एक ही समय पर व्यायाम करते थे लेकिन जिम पार्टनर के रूप में नहीं। लेकिन किसी से अक्सर मिलने से अपनेपन और बंधन की भावना को बढ़ाता है जिसे हम तब तक महसूस नहीं करते जब तक कि अलविदा कहने का समय नहीं आ जाता।

उस दिन जब हम महीनों बाद मिले थे तो हम दोनों को सुखद एहसास हुआ। हम दोनों एक दूसरे को देखकर खुश हुए, मानो वर्षों पुराने मित्र से मिले हो। मैंने उनसे उनके स्वास्थ्य, ठिकाने और जिम में लंबे समय से अनुपस्थित रहने के कारण के बारे में पूछा, तो उन्होंने जवाब दिया, "सरजी आज मेरा सिक्किम में आखिरी दिन है। मैं एक बेहतर नौकरी की तलाश में कई जगहों का दौरा कर रहा था। कल मैं हमेशा के लिए शहर छोड़कर जा रहा हूं क्योंकि मुझे गुजरात में एक बेहतर नौकरी मिली है| शायद इस शहर में यह आखिरी मुलाक़ात है, अलविदा सरजी। हम दोनों ने हाथ मिलाया और एक-दूसरे को आगामी भविष्य की शुभकामनाएं सांझा की। जब भी कभी मैं किसी से अंतिम बार मिलता हूँ तो विदाई संदेश के रूप में बस दिल से एक बात कहता हूँ कि "जीवन में खुश रहो"।

उन्होंने अपना आभार व्यक्त किया और मिनटों में हम हमेशा के लिए एक-दूसरे से अलग हो गए। अब हम एक-दूसरे से फिर कभी नहीं मिलने वाले हैं। लेकिन यह जानकर कि हमारे दिलों में एक-दूसरे के लिए कोई भी शिकायत या पछतावा नहीं है, हमेशा बड़ी राहत की अनुभूति होती है।

जीवन में ढेर सारी अलविदा कहने के बाद, ऐसे लोगों को देखकर मुझे हमेशा अफ़सोस होता है , जो साथ तो रहते हैं , लेकिन नफरत से भरे दिलों के साथ। ऐसे लोग जो कभी अपने आशीर्वाद की गिनती नहीं करते हैं। ऐसे लोग जो अपनो के और अपनापन का कभी कदर नहीं करते|

और सोचता हूँ की काश उन्हें भी "कुछ पल का रिश्ता, बिछड़ना हमेशा के लिए " वाले रिश्तों के बारे में पता होता !

****

विश्वविद्यालय में राजभाषा हिंदी और मेरा अनुभव

- गगन सेन छेत्री
उच्च श्रेणी लिपिक, शैक्षणिक विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय

संविधान की धारा 343(1) में देवनागरी में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में घोषित किया गया था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा राजभाषा के बारे में बताया गया था कि यह अधिकांश जनता द्वारा समझी जाने वाली, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवहार में बखूबी चलनेवाली सक्षम भाषा है। हिंदी विश्व में चीनी भाषा के बाद बोली जाने वाली सबसे बड़ी भाषा है। हिंदी भाषा सरल एंव आसानी से समझे जाने वाली वैज्ञानिक भाषा है।

भारत सरकार ने हिंदी के प्रचार-प्रसार और उन्नयन को बढ़ावा देने हेतु केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी प्रकोष्ठ की स्थापना की है। सिक्किम विश्वविद्यालय में भी वर्ष 2012 में हिंदी प्रकोष्ठ की स्थापना की गई थी। हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के लिए विभिन्न राजभाषा प्रशिक्षण, कार्यशाला आदि का आयोजन किया जाता है। इससे सभी कर्मचारियों राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए मदद मिलती है और अधिक-से अधिक कार्य करने के प्रेरणा मिलती है। इस तरह के आयोजनों से सिक्किम विश्वविद्यालय में प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रचालन को काफी बढ़ावा मिला है।

मैने केन्द्रीय हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित हिंदी भाषा प्रशिक्षण संबंधित प्रवीण और प्राज्ञ परीक्षाएँ उतीर्ण की है। हिंदी प्रकोष्ठ, सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा अनेक छोटे-बड़े सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि का आयोजन किया जाता है। जिसके कारण हम सभी कर्मचारियों को हिंदी बोलने, लिखने और पढ़ने का मौका मिला है।

हिंदी प्रकोष्ठ, सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा हर साल सितम्बर माह में 15 दिनों के लिए हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया जाता है। इस पखवाड़े के दौरान छात्रों, शिक्षण और गैर-शिक्षण कर्मचारियों के लिए श्रुतलेख, पात्रलेखन, टिप्पणी लेखन, आशु भाषण जैसे विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। प्रोत्साहन के लिए इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नगद पुरस्कार और प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है। पखवाड़ा में भाग लेकर मैंने कार्यालयी हिंदी के विविध स्वरूपों को जाना है। साथ प्रतियोगिताओं में नगद पुरस्कार और प्रमाणपत्र भी प्राप्त किया है।

मुझे शुरुआत में सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। लेकिन हिंदी अधिकारी के मार्गदर्शन और हिंदी अनुवादक के सहयोग से मैंने हिंदी में कामकाज शुरू किया। शुरुआत मैंने छोटी टिप्पणी लेखन से की और धीरे धीरे आधिकारिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाता गया और निरंतर जारी रखा। कई आधिकारिक शब्दों के लिए मैंने हिंदी अधिकारी द्वारा प्राप्त प्रशासनिक शब्दावली पुस्तक की मदद ली। मेरे हिंदी लेखन के विकास में प्रशासनिक पुस्तकालय का भी बड़ा योगदान रहा, जो कि हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा संचालित की जाती है। मुझे राजभाषा हिंदी के प्रयोग में उत्कृष्ठ प्रदर्शन करने और राजभाषा के प्रयोग में सरहनीक कार्य करने के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अंत में यह बताना चाहता हूँ कि हिंदी न सिर्फ हमारे देश की राजभाषा है और अपने देश की अस्मिता का प्रतीक है। इसका सम्मान करते हुए मेरे सभी सहकर्मियों से अनुरोध है कि अपने दैनिक आधिकारिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करें।

****

सिलीगुड़ी – एक सफ़र

- अशेष शर्मा
प्रयोगशाला परिचारक , प्राणी विज्ञान विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय

अगर आप भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों का भ्रमण कर रहे हैं तब आपने सिलीगुड़ी का नाम जरूर सुना होगा। इस शहर को उत्तर-पूर्व का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। हिमालय के गोद में सजा यह शहर जितना मनोरम है उतने ही प्यारे यहाँ के लोग। इसकी सीमाए३ देशों)भूटान, नेपाल और बांग्लादेश (से लगने के कारण सामरिक रूप से भी यह शहर काफी महत्वपूर्ण है। मानचित्र में इस शहर का आकार मुर्गी के गर्दन की भांति लगने के कारण इस शहर को *चिकेन नैक* भी कहा जाता आ रहा है।

महानंदा नहीं के तट पर बसा यह शहर किसी जमाने 18)वीं शताब्दी (में सिक्किम राज्य का हिस्सा हुआ करता था। आज सिलीगुड़ी पश्चिम बंगाल का तीसरा बड़ा शहर है। यहाँ पर विभिन्न जाति के लोग मिल-जुल कर रहते हैं। उत्तर बंगाल का प्रमुख आर्थिक शहर होने के कारण यहाँ पर बहुत सारी भाषाएँ बोली जाती हैं। बांग्ला, हिंदी, नेपाली, भोजपुरी आदि यहाँ की प्रमुख भाषाएँ हैं।

अगर आप सिलीगुड़ी आ रहे हैं तो यहाँ के खचाखच भरे बाजार, बड़े-बड़े मॉल, सुंदर पार्क, धार्मिक स्थल और बहुत सारे पर्यटन स्थलों का भ्रमण अवश्य करें। यहाँ के मशहूर हंकांग मार्केट आप को शपिंग करने को मजबूर कर सकता है। छुट्टी के दिन लोग सिटी सेंटर और वेगा मॉल जाना पसंद करते हैं। यहाँ के इस्कन मंदिर आपको ईश्वर के करीब होने का एहसास कराएगा। सुंदर चाय बागान और छोटा सा सुंदर रेल स्टेशन गुलमा टी एस्टेट की खासियत है। अगर आप सिलीगुड़ी आ रहे हैं और बंगाल सफारी नहीं गए तो आपका सफ़र अधूरा रह जाएगा। यहा पर आपको विभिन्न जीव-जन्तु के साथ-साथ बंगाल टाइगर का भी दर्शन मिलेगा। सिलीगुड़ी से थोड़ी दूर मौजूद है कोरोनेशन ब्रिज। (Coronation Bridge) जो तीस्ता नदी के ऊपर बना है। यह ब्रिज ब्रिटिशकालीन इंजीनियरिंग का नमूना पेश करता है। सिलीगुड़ी शहर से पहाड़ों का दर्शन आसानी से हो जाता है, जो देखने में काफी मनमोहक लगता है। अगर आप उत्तर-पूर्व भारत का भ्रमण कर रहे हैं तो कुछ दिन सिलीगुड़ी में जरूर रुकिए और इस शहर का दर्शन कीजिए, आप आनंदित महसूस करेंगे।

****

उपलब्धियां :

विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों, कर्मचारियो एवं छात्रों की हाल की उपलब्धियां :

प्रो. ज्योति प्रकाश तामांग, वरिष्ठ प्रोफेसर, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग को राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, (एनएएसआई- इलाहाबाद), भारत के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित विज्ञान अकादमी में अध्येता (फैलो) के रूप में चयनित किया गया।

वर्ष 2022 में कार्यालय में हिंदी टिप्पणी लेखन में 10000 (दस हजार) शब्द पूरा करने पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी आदेश के अनुसार श्री गगन सेन छेत्री, यूडीसी, शैक्षणिक को विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति प्रो. शांति स्वरूप शर्मा और कुलसचिव श्री के. वी. एस. कामेश्वर राव के कर कमलों से रु. 5000/- राशि का प्रथम पुरस्कार और प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

विश्वविद्यालय के छात्र श्री नवराज गुरुंग ने संसद में आयोजित कार्यक्रम में सिक्किम विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

विश्वविद्यालय में आयोजित राजभाषा हिंदी की विभिन्न गतिविधियों की एक झलक :

हिंदी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह में सभा को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर अविनाश खरे

हिंदी पखवाड़ा -2021 में विजेताओं को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए कुलपति प्रोफेसर अविनाश खरे

हिंदी पखवाड़ा -2022 के दौरान आयोजित काव्यपाठ प्रतियोगिता

हिंदी पखवाड़ा-2022 के समापन समारोह में स्वागत गीत प्रस्तुत

हिंदी पखवाड़ा-2022 के समापन समारोह में संबोधित करते हुए प्रभारी कुलपति प्रो. एस.एस. शर्मा (बाएं)
और कुलसचिव श्री के.वी.एस. कामेश्वर राव (दायें)

हिंदी पखवाड़ा-2022 के समापन समारोह में गीत प्रस्तुत करते हुए विश्वविद्यालय के विद्यार्थी

दिनांक 23 नवंबर, 2021 को राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान और सिक्किम विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राजभाषा संगोष्ठी-सह-कार्यशाला में संबोधित करते हुए प्रभारी कुलपति प्रोफेसर एस. एस. शर्मा, वरिष्ठ प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, हिंदी पखवाड़ा -2022 के समापन समारोह में दर्शक-दीर्घा

संगोष्ठी की स्मारिका का विमोचन

हिंदी में हस्ताक्षर अभियान

प्रशासनिक लघु वाक्य

Actlon may be taken accordlngly	तदनुसार कार्रवाई की जाए
As may be consldered expedlent	जैसा कि समीचीन प्रतीत हो
As recommended by the concerned department	संबंधित विभाग की सिफ़ारिशों के अनुसार
Brlef note ls placed below for your ready reference	आपके सुलभ संदर्भ हेतु संक्षिप्त नोट नीचे प्रस्तुत है
Case ls resubmltted as dlrected on pre page	तुत्रस्प :पूर्व पृष्ठ पर निदेशानुसार मामला पुन
Concurrence of the flnance sectlon ls necessary ln thls matter	इस विषय में वित्त अनुभाग की सहमति आवश्यक है
Consolldated report may be furnlshed	समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए
Copy forwarded for lnformatlon/necessary actlon	रतिलिपिप लिए के रवाईकार यक्आवश/सूचना के लिए अग्रेषित
Draft reply may be put up for approval	उत्तर का प्रारूप अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किया जाएँ
Explanatlon may be called for	स्पष्टीकरण मांगा जाए
Forwarded and recommended	अग्रेषित और संस्तुत
Forwardlng letter ls submltted for your slgnature please	अग्रेषण पत्र आपके हस्ताक्षर हेतु प्रस्तुत है।
May be lnformed accordlngly	तदनुसार सूचित किया जाए
Matter ls under consldAeratlon	विषय विचाराधीन है, मामला विचाराधीन है
May be treated as urgent	इसे अति आवश्यक समझा जाए
Necessary steps should be taken	आवश्यक कार्रवाई की जाए, आवश्यक कदम
No actlon requlred ln thls matter	इस विषय पर कार्रवाई आवश्यक नहीं है।
Notes and orders at page...may please be seen ln thls connectlon	को टिप्पणियों और आदेशों गए दिए पर---पृष्ठ में संबंध इस जाए लिया देख कृपया
Notlfled for general lnformatlon	अधिसूचित लिए के जानकारी सार्वजनिक
Offlce order/clrcular/notlflcatlon may be lssued	जाए दिया कर जारी कार्यालय आदेश/परिपत्र/अधिसूचना
Please comply before due date	कृपया नियत समय से पहले इसका पालन करें
Please dlscuss	कृपया चर्चा करें
Please treat thls as strlctly confldentlal	इसे सर्वथा गोपनीय समझें
Please refer note sheet no….	कृपया नोट शीट संख्या .. का सन्दर्भ लें
Remlnder may be sent	
Relevant papers be put up	जाए किए प्रस्तुत पत्र-कागज़ संबंधित
Remlnder may be sent	दें भेज पत्र जाए, स्मरण भेजा अनुस्मारक
Submltted for lnformatlon	प्रस्तुत सूचनार्थ
Submltted for approval	प्रस्तुत हेतु अनुमोदन
Submltted for order(s)	प्रस्तुत आदेशार्थ
Submltted for your klnd perusal and approval	प्रस्तुत है अवलोकनार्थ एवं अनुमोदनार्थ आपके
Such actlon as may be deemed necessary	जाए समझी आवश्यक जो कार्रवाई ऐसी
Submltted for approval	प्रस्तुत हेतु अनुमोदन
Speclflc reason may be glven	दें कारण विशिष्ट

जारी .....

राजभाषा सिक्किम

(भाषा, साहित्य और शिक्षा का नवीन संगम)

अर्धवार्षिक पत्रिका

(जनवरी-जून 2023)

लेखकों से अनुरोध :

1. पत्रिका में छापने के लिए भेजी जानेवाली सामग्री यथासंभव सरल और सुबोध होनी चाहिए। रचनाएँ प्राय: टंकित रूप से भेजी जाएँ। हस्तलिखित सामग्री यदि भेजी जाएँ तो वह सुपाठ्य, बोधगम्य तथा सुंदर लिखावट में होनी अपेक्षित है। रचना की मूलप्रति ही भेंजे।
2. लेख आदि का फॉन्ट *मंगल* अथवा *कोकिला* हो। लेख 5 टंकित पृष्ठों से अधिक नहीं होना चाहिए।
3. अनुवाद सामग्री के साथ मूल लेखक की अनुमति भेजना अनिवार्य है।
4. रचना के ऊपर अपना नाम, विभाग और पता अँग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में होना चाहिए।
5. सामग्री के प्रकाशन विषय में संपादक-मंडली का निर्णय अंतिम माना जाएगा।
6. रचनाओं की अस्वीकृति के संबंध में अलग से कोई पत्राचार नहीं किया जाएगा। अस्वीकृत रचनाओं को लौटाना संभव नहीं है, अत: अपनी-अपनी रचनाओं की प्रति अपने पास अवश्य रख लें।

संपादकीय कार्यालय

हिंदी प्रकोष्ठ, सिक्किम विश्वविद्यालय,
प्रधान प्रशासनिक भवन, 6 माइल, तादोंग,
गंगटोक, सिक्किम – 737102, hc@cus.ac.ln

सिक्किम विश्वविद्यालय,
प्रधान प्रशासनिक भवन, 6 माइल, तादोंग,
गंगटोक, सिक्किम – 737102,

राजभाषा सिक्किम

धन्यवाद

सिक्किम विश्वविद्यालय